पुरुलिया के प्राकृतिक ऐश्वर्य के बीच

दुर्गा पूजा के शोर शराबे से दूर भागने की हमारी आदत बहुत पुरानी है। दूर किसी पहाड़ी गांव में निर्जन प्रकृति की गोद में समय बिताकर मन मानो सही अर्थों में तृप्त हो उठता है। यही हमारे लिए पूजा है। आत्मसाधना है। इस बार हमारी मंजिल थी बंगाल के पुरुलिया जिले में पंचेत पहाड़ की गोद में स्थित स्थान गढ़पंचकोट और बरंती।

आसनसोल स्टेशन पर उतर कर जैसे ही हमारी गाड़ी शहर के भीड़ भाड़ को पीछे छोड़कर आगे दौड़ने लगी, वैसे ही प्रकृति के खूबसूरत नज़ारे आँखों को खींचने लगे। चिकने, चौड़े, काले रास्ते के दोनों ओर हरे धान के खेत ऐसे लग रहे थे, मानो धरती पर किसी ने हरी चादर बिछा दी हो। थोड़ा आगे चलकर पलाश और साल के जंगल के बीच से दौड़ती हुई हमारी गाड़ी पंचेत बांध पहुँची।

दामोदर नदी पर बना पंचेत बांध धनबाद जिले के अंतर्गत आता है। बाँध से नदी का सौंदर्य मन को बरबस खींच लेता है। नदी किनारे बाँध के दीवार की ओर बंधी काठ की छोटी-छोटी नावों ने मेरा ध्यान खींचा। बाँध की ऊँचाई से ये नाव खिलौनों जैसे दिख रहे थे। बाँध के एक ओर दामोदर नदी का विस्तृत वक्षस्थल और दूसरी ओर बाँध के ऊपर से नीचे तक की ढलान पर बिछी हरी घास थी। इस ढलान के खत्म होने के साथ ही हरे घने पेड़ों का जंगल दूर तक फैला हुआ नजर आ रहा था। बाँध के फाटक के दूसरी ओर दामोदर नदी क्षीण नजर आ रही थी। बांध पर खड़े होकर नदी, जंगल, हरे ढलान और सामने खड़े पहाड़ को एक साथ देखना एक स्वर्गीय अनुभव था।

वन विकास निगम के प्रकृति भ्रमण केन्द्र के 'बैरोनेट' कॉटेज में हमारी बुकिंग थी। प्रकृति भ्रमण केन्द्र जाने से पहले हम गढ़ की तरफ गए। गढ़ इलाके में राजमहल और ऐतिहासिक युग के मन्दिरों के ध्वंसावशेष मिलते हैं। सन् 1740 में अलीवर्दी खाँ सरफराज खाँ का कत्ल करके बंगाल के नवाब बने। सरफराज के रिश्तेदार रुस्तम जंग ने अलीवर्दी खां को चुनौती दी। लेकिन हार जाने के कारण उसने नागपुर के मराठा शासकों से मदद मांगी। मराठा सैनिकों का एक दल पंचेत के रास्ते से ही बंगाल पहुँचा और इस इलाके में भारी लूट मचाई। इन्हीं को यहाँ के लोग 'बोर्गी' कहने लगे। तकरीबन दस साल तक इन्होंने बंगाल को खूब लूटा। सन् 1751 में बंगाल के

राजा और मराठा राजा के बीच एक संधि होने के कारण यह लूटपाट बन्द हुआ। एक हमले में 'बोर्गियों' ने गढ़पंचकोट पर आक्रमण करके राजा के सुरक्षा बल को प्राय: ध्वस्त कर दिया था। और राजमहल को बुरी तरह लूट लिया था। कहा जाता है कि राजा की सत्रह रानियों ने कुएँ में कूद कर अपनी जान दे दी थी। गढ़पंचकोट के राजमहल के खंडहर आज पलाश, साल, मेहुल और जंगली पेड़ों के आहोश में खोकर उस नृसंशता से भरे सत्य को अपने में दबाकर बैठे हैं। जो निशानी आज भी जग रही है वह है राज परिवार का रास मन्दिर। यह प्रेम के प्रतीक राधा कृष्ण का मन्दिर है। इसे गढ़पंचकोट का पंचरत्न मन्दिर कहा जाता है। इसे 2001 के धारा - IX के तहत संरक्षित ऐतिहासिक इमारत घोषित किया गया है। इसे देखकर ऐसा महसूस हुआ कि इतिहास भले ही हिंसा से भरा हो लेकिन अंत में जीत हमेशा प्रेम की ही होती है।

गढ़ का अर्थ है दुर्ग। इस इलाके में राजा का दुर्ग था। शायद इसलिए इस इलाके को गढ़ पंचकोट कहा जाता है। हमारी गाड़ी मसृण काली पक्की सड़क पर चलने लगी थी। दोनों ओर जंगली पेड़ों के साथ-साथ साल, पलाश, खजूर, के पेड़ों का जमघट था। बीच-बीच में दूर कहीं धान के खेत भी नजर आ रहे थे। बीच-बीच में खाली जमीन पर शिवमन्दिर या फिर शक्ति के उपासकों के मंदिर भी दिखे। शिव मंदिर के सामने नान्दी सांड की मूर्ति भी थी। इतिहास बताता है कि इस इलाके में शिव, शक्ति और वैष्णव भक्तों का निवास था। वैष्णव भक्त राधा कृष्ण के उपासक थे। तभी यहाँ शिव, चण्डी और राधा कृष्ण के मंदिर मिलते हैं। चण्डी या मां काली के मंदिर के सामने बलि वेदी भी दिखी। जंगल के बीच किसी खाली इलाके में खड़े ये मंदिर यहाँ की हवाओं में इतिहास और आस्था का रंग एक साथ घोलते हुए से जान पड़ रहे थे।

वन विकास निगम का प्रकृति भ्रमण केन्द्र पंचेत पहाड़ के पदस्थल पर है। देर से बुकिंग करवाने के कारण हमें दो दिन दो अलग-अलग कॉटेज में बुकिंग मिली। बैरोनेट और सन बर्ड दोनों ही इस केन्द्र के बेहतरीन कॉटेज लगे। मैंने सुना था कि यह इलाका तितलियों और पक्षियों का घर है। पक्षियों को निरखने का शौक रखने वाले पर्यटक यहाँ अक्सर वक्त बिताने आते हैं। सुबह की सैर पर निकलकर ऐसे पक्षी निरिक्षक दिख भी गए। गढ़पंचकोट में पंचेत रेसिडेन्सी, ईको टूरिज्म रिसोर्ट, प्रकृति भ्रमण केन्द्र और गढ़ इलाके का ईको रिसोर्ट 'अरण्येर दिनरात्री' जैसे कुछ ही अतिथिशालाएँ हैं। इनमें से ठीक गढ़ के इलाके में रास मन्दिर के पास स्थित 'अरण्येर दिनरात्री' में रहने से इतिहास और प्रकृति की महक को एक साथ महसूस किया जा सकता है।

सैर पर निकलकर यहाँ के बागमारा गांव के लोगों से मिलने का मौका मिला। पक्की सड़क से उतरकर कच्ची मिट्टी के रास्ते पर हम चलने लगे थे। खप्परों की छत वाले मिट्टी के घरों के सामने से हम गुजर रहे थे। मिट्टी के दीवार पर बने दरवाजे से जरा सा सिर झुकाकर अन्दर देखने का मन किया। मन में झिझक तो थी पर इच्छा भी कब पीछा छोड़ने वाली थी। उसने झिझक को पछाड़ दिया। अन्दर झाँकते ही बड़ा मिट्टी का आंगन दिखा। जिसमें बकरियाँ और मुर्गियाँ घूम रही थीं। उस घर से कुछ दूरी पर एक औरत कटी हुई लकड़ियों को जलाने के लिए और छोटे आकार में उन्हें काट रही थी। गठीले सांवले उसके तन पर कहीं भी विज्ञापन में दिखाई जाने वाली स्त्रियों जैसी कोमलता नहीं थी। उसका मेहनतकश अंदाज मानो उसे उसके परिवार के रीढ़ की हड्डी होने का प्रमाण पत्र दे रहा था। अब तक यहाँ की हवाओं और वातावरण ने मानो हमें चुपके से यह बता दिया था कि इस गांव के लोगों को प्रकृति भ्रमण केन्द्र में आए पर्यटकों को इस तरह यहाँ घूमते हुए देखने की आदत सी पड़ गई है। इसलिये इस गांव में घूमते हुए फिर जरा भी झिझक नहीं महसूस हुई।

बागमारा गांव से प्रकृति भ्रमण केन्द्र में लौटते हुए हम एक अद्भुत अनुभव के साक्षी बने। घने पेड़ों के बीच से निकले कच्ची मिट्टी के रास्ते पर हम चल रहे थे। और हल्की-हल्की हवा भी चलने लगी थी। इन हवाओं ने वृक्षों के पत्तों को कुछ इस तरह हिलाया कि आपस में पत्तों के टकराने के कारण बारिश की आवाज होने लगी। कई तरह के वृक्ष वहाँ कतार में उगे हुए थे। उनमें से एक वृक्ष के महीन पत्ते झरकर सच में बारिश के होने का एहसास दिला रहे थे। फर्क सिर्फ इतना था कि बरसात मे जल की बूंदें गिरती हैं और यहाँ महीन पत्ते झर रहे थे।

प्रकृति भ्रमण केन्द्र से निकलकर स्पैंगल विंग्स रिसोर्ट, बरंती जाने का पल हाजिर था। पक्की सड़क पर हमारी गाड़ी एक बार फिर दौड़ने लगी थी। पहाड़ के पदतल के रास्ते का अपना ही सौंदर्य होता है। कभी ऊँचा तो कभी नीचा। पक्की सड़कों के दोनों ओर हरी धान की खेती नज़र आने लगी थी। दूर पंचेत पहाड़ भी नजर आ रहा था जिसे पीछे छोड़कर हम बेरो पहाड़ का नजारा देखते हुए जयचण्डी पहाड़ की ओर जा रहे थे। जयचण्डी पहाड़ सख्त पत्थर से बना पहाड़ है। इस पर पंचेत पहाड़ की तरह वनस्पति नहीं है। इस पहाड़ के शिखर पर चण्डी और हनुमान जी का मन्दिर है। 503 सीढ़िया चढ़कर हम शिखर पर पहुँचे। शिखर से नीचे के नज़ारे ने मन को एक अलग ऊँचाई पर पहुँचा दिया। खेत, मैदान, जलाशय, ताश के पत्तों से दिखने वाले घरों का नज़ारा मन को मोह लेने वाला था। जयचंडी पहाड़ पर ही जयचंडी हिल रिसोर्ट स्थित है।

पहाड़ का यह शिखर मंदिर वाले शिखर से थोड़ी दूरी पर स्थित है। उस रास्ते से गुजरते हुए हम रिसोर्ट पर थोड़ी देर के लिए ठहरे। रिसोर्ट से बाहर चन्दन सी मिट्टी का रास्ता, जलाशय, हरे खेत, मैदान और उस पर रिसोर्ट का वातावरण हममें अलग से किसी सफर पर आकर यहाँ रुकने की इच्छा जगा रहे थे। लेकिन वक्त बहुत कम था। इसलिए हम बरंती पहाड़ की ओर चल दिए।

जयचंडी पहाड़ से बरंती जाने का रास्ता बेहद खूबसूरत है। पंचेत पहाड़ का जंगलीपन यहाँ नहीं दिखता। खेत मैदान ज्यादा हैं। लेकिन साल, पलाश, केला, नीम, आम, मेहुल के वृक्ष भी दिख रहे थे। इस इलाके में एक अलग सी निरवता थी। पहाड़, झील, मैदान और पेड़ों ने मिलकर इस जगह को एक अलग सौंदर्य से भर दिया था। स्पैंगल विंग्स रिसोर्ट बहुत खूबसूरत जगह पर स्थित है। स्पैंगल तितली की एक प्रजाति का नाम है। यहाँ आकर हमें तितलियाँ इफरात में दिखीं। पंचेत में हमें तितलियाँ भले ही इफरात में न दिखी हों लेकिन वहाँ कॉटेज के काँच की खिड़कियों पर अलग-अलग पक्षियों के चोंच से ठोकर मारने के दृश्य को हमने खूब नजदीकी से देखा। तरह-तरह की पक्षियाँ, रंग बिरंगी, लंबी और छोटी पूंछ वाली और न जाने कितने तरह की। वह मंजर मानो सही अर्थों में प्रकृति के बीच तल्लीन हो जाने का मंजर था। तितलियों को देखने का शौक बरंती में आकर पूरा हुआ।

स्पैंगल विंग्स रिसोर्ट की बड़ी-बड़ी कांच की खिड़कियों से बरंती की झील, बाँध और पास के पहाड़ साफ नज़र आते हैं। झील का पानी नीली आभा लिए हुए दिखाई देता है। दूर तक फैले मैदान और साथ में जंगल का दृश्य यह एहसास दिलाते हैं मानो धरती ने हरी कालीन ओढ़ रखी हो। धीरे-धीरे बरंती की वादियों में रात उतरने लगी। भले ही पूनम की रात नहीं थी पर चांदनी के चलते पहाड़, झील, मैदान, कॉटेज की खिड़की से साफ नज़र आ रहे थे। मैंने समन्दर के किनारे बसे अतिथिशालाओं से रात के उतरने का नज़ारा देखा था। वहाँ रात जैसे हर नज़ारे को घनघोर अंधेरे में डुबो देती हुई सी प्रतीत होती है। लेकिन यहाँ अंधेरे और चांदनी ने मिलकर जैसे पूरे नजारे का एक स्केच सा बना दिया था। इसे अपलक निरखना एक स्वर्गीय अनुभव था।

रात को रिसोर्ट के मालिक कुछ चिन्ताग्रस्त हालत में दिखे। पूछने पर बताया कि एक अतिथि सपरिवार स्वयं गाड़ी चलाकर अयोध्या पड़ाड़ गए। अब रात के ग्यारह बज रहे हैं। वे अभी तक नहीं लौटे। उन्हें डर था कि कहीं वे रास्ता ना भटक गए हों। यहाँ पहाड़ी इलाके के घने जंगल से रात को सियार, भेड़िये, बाघ जंगल से उतरते हैं। इसलिए पर्यटकों को यह कहा

जाता है कि शाम होने तक रिसोर्ट लौट आएँ। इलाके का गाड़ी चालक साथ गया होता तो कोई चिंता की बात न थी। लेकिन जो इस इलाके का नहीं है वह इन पहाड़ी रास्तों में भटक सकता है। रात को तो रास्ता बताने वाला भी कोई नहीं मिलेगा। उस पर भोजन का दायित्व संभालने वाले लड़कों को रात को पहाड़ी के पीछे अपने घर लौटना भी था। अतिथियों से किसी भी तरह संपर्क भी नहीं हो पा रहा था। थोड़ी देर के लिए रिसोर्ट में रुके अन्य अतिथियों को भी चिंता ने घेर लिया। रिसोर्ट के मैनेजर ने बताया कि पिछले साल भेड़िये तकरीबन चौदह पिल्लों को एक-एक करके उठाकर ले गए। रात को यहाँ जंगल से अलग-अलग जानवरों की आवाजें आती हुई सुनाई देती हैं। दरअसल सियार की आवाजें सुनाई भी दे रही थी। इतने में रिसोर्ट के मालिक ने हिरण की बात छेड़कर वातावरण को हल्का कर दिया। मुझे पता चला कि बरंती के इसी झील में हिरणों का दल पानी पीने आता है। किस्मत बहुत अच्छी हो तो दिखाई दे जाते हैं। इतना ही नहीं भेड़िये भी यहीं पानी पीने उतरते हैं। यह सुनते ही मेरी बेटी बोल उठी कि एक ही झील में दोनों पानी पीने उतरें तो हिरन को तो भेड़िये मार देंगे। मेरा मन तुरंत बोल उठा कि जंगली जीवन के सत्य हैं जोखिम और संघर्ष। ईश्वर ने मनुष्य को सभ्य होने की नेमत दी लेकिन इंसान है कि सभ्य समाज में भी हिंसा के जंगली नियम से ही चलता है। इन जंगली जानवरों को कम से कम प्रकृति का सौंदर्य तो मयस्सर होता है, लेकिन मनुष्य तो आज इस वरदान से भी महरूम होता जा रहा है। इसी उधेड़बुन में अतिथियों की गाड़ी आती हुई नजर आई। सबने राहत की सांस ली।

बरंती में सूर्योदय के दृश्य और सुबह की सैर के नज़ारों ने मन को खूबसूरत एहसासों से भर दिया। रिसोर्ट के छत से सूर्योदय देखने का मंजर रोमांचक था। पहाड़ के पीछे का हिस्सा धीरे-धीरे सुन्हरा होने लगा था और जब सूरज उसके पीछे से निकला तब पहाड़ की चोटी पर वह एक चमकते हुए हीरे सा नज़र आया। यह क्षण आने से पहले चारों और रौशनी फैल चुकी थी। क्योंकि सूर्योदय बहुत पहले ही हो चुका था। हम सिर्फ सामने खड़े विशाल पहाड़ की चोटी से सूरज को ऊपर उठते हुए देखने का इंतजार कर रहे थे। यह सूर्योदय के बाद के सूर्योदय का इंतजार था।

सूर्योदय के दृश्य से तृप्त होकर हम सुबह की सैर को निकल पड़े। गांव, कच्ची मिट्टी का रास्ता, मिट्टी के घरों को पार करते हुए हम आगे बढ़ रहे थे। शरद ऋतु की ठंडी हवा शरीर को छूकर मन में मानों रिस रही थी। गांव पार करते ही पक्के रास्ते के दोनों ओर झाड़ - झंखाड़

दिखने लगे। झाड़-झंखाड़ों के पीछे खेत और उसके भी पीछे पहाड़ दिख रहे थे। इस तरह चलते हुए हम पलाशबाड़ी पहुँचे। इस अतिथिशाला में उगे टिकेमी के पीले फूलों के गुच्छों ने मन को मोह लिया। रिसोर्ट का वातावरण जंगल में होने का एहसास दिला रहा था। लेकिन इस जंगलीपन में अंधेरा घुला हुआ था। इसलिए मन ज्यादा देर वहाँ टिक नहीं पाया।

पलाशबाड़ी से बाहर निकलकर थोड़ी दूरी पर एक फूलों से भरा तालाब था। कमल की तरह सफेद फूल पूरे तालाब में खिले हुए थे। इसे यहाँ के लोग 'शालूक फूल' कहते हैं। फूलों से भरे तालाब को पार करके 'एल्बम' और 'गीतांजली रिसोर्ट' को पीछे छोड़कर हम ऐसी जगह पहुंचे जिसे स्वर्ग कहें तो गलत नहीं होगा। दूर तक फैली हरी धान की खेती और उसके पीछे जंगल और उसके पीछे पहाड़ के दृश्य ने हल्के और गहरे हरे रंग के सम्मिश्रण से एक अद्भुत नज़ारा तैयार कर दिया था। खेत की सतह और उसके पीछे सतह से ऊपर उठे जंगली पेड़ और उसके भी पीछे सतह से बहुत ऊपर उठे पहाड़ ने एक अद्भुत पैटर्न तैयार कर दिया था। रंग और पैटर्न के इस अद्भुत मेलबंधन से नज़रे हटा पाना मुश्किल था।

शाम को साढ़े सात बजे एक और अनोखा अनुभव हमारा इंतजार कर रहा था। रिसोर्ट के बाहर पेड़ों से घिरी एक खुली जगह पर प्रकाश का आयोजन था। वहाँ बीच की खाली जगह को घेरकर गोलाकार बैंच लगे हुए थे। यही आदिवासी नृत्यकारों का मंच था। शाम के सवा सात बजे तक आदिवासी नृत्यकारों का दल झाल, मृदंग, फूलों से सजे पीतल के घड़ों के साथ रिसोर्ट के द्वार पर हाजिर था। पुरुष झाल मृदंग बजा रहे थे और स्त्रियों के पैर गीत के बोल पर थिरक रहे थे। उनके नृत्य में सबसे ज्यादा गौर करने लायक गुण था सामंजस्य। स्त्रियों ने एक दूसरे के हाथ पकड़े हुए थे। और सबके सिर पर पीतल का घड़ा था। संतुलन ऐसा कि हाथ और पैरों के हिलने के बावजूद घड़ा सिर से टस से मस नहीं हो रहा था। एक और खास बात थी इस नृत्य दल में। इसमें छोटे-छोटे बच्चों को भी एक दूसरे का हाथ पकड़ाकर कतार में ले लिया गया था। कुछ बच्चे तो फ्रॉक ही पहन हुए थे। दरअसल नृत्य और संगीत इनके लिए कोई दिखावे के साथ परोसने वाला साधन नहीं है। गीत उनके जीवन से जुड़े हैं। तभी गीत शुरू होते ही उनके पैर अपने आप थिरकने लगते हैं। और बच्चे भी यूँ ही साथ देते देते गीत, नृत्य और घड़े को बिना किसी सहारे के सिर पर रखना सीख जाते हैं। संतुलन और सामंजस्य इनके जीवन का भी महत्वपूर्ण अंग है। यह पहाड़ी गाँवों की खासियत भी है कि यहाँ यातायात के साधन और जीवन

की सामान्य सुख सुविधाएँ कम होने के कारण लोग एक दूसरे की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। अत: आपसी रिश्तों में भी सामंजस्य और संतुलन है।

बरंती झील पर बरंती बाँध बना है। बाँध के इलाके में सुबह सैर पर जाकर मन प्राकृतिक सौंदर्य में खो गया। एक ओर झील का पानी और दूसरी ओर दूर तक फैले हरे खेत और खेतों के पीछे बरंती पहाड़ की श्रृंखलाएँ। स्पैंगल विंग्स रिसोर्ट के हमारे कमरे की खिड़की से झील के उस पार एक खूबसूरत सा रिसोर्ट दिखाई दिया था। उसे देखने की चाह के साथ ही हम बाँध को पार करके झील के दूसरी ओर आ गए और खुद को एक हरे भरे पहाड़ के पद तल पर खड़ा पाया। यह मुराडी पहाड़ था। इस पहाड़ के ही बगल से झील के किनारे से होकर एक रास्ता निकल गया था। एक ओर पहाड़ और दूसरी ओर झील। इसी रास्ते पर थोड़ा चलकर हम मुराडी ईको रिसोर्ट पहुँचे। यही वह रिसोर्ट था जो हमारे रिसोर्ट के कमरे की खिड़की से दिखता था। यह रिसोर्ट जैसा सोचा था वैसा ही खूबसूरत निकला। सामने पहाड़ का दृश्य और पीछे झील का दृश्य।

बरंती को अलविदा कहने का समय आ गया था। हमें सिसुनिया और बिहारीनाथ पहाड़ से होकर आसनसोल लौटना था। शाम के साढ़े पाँच बजे आसनसोल स्टेशन से गाड़ी थी।

सिसुनिया पहाड़ की गोद में देवी मां का मंदिर है। मंदिर दर्शन करने के साथ-साथ पत्थर और काठ से बने सुंदर नक्काशीदार सामान यहाँ खरीदे जा सकते हैं। बरंती से यहाँ तक आने के रास्ते में जो खेत और दूर खड़े पहाड़ों का दृश्य दिखा, उसे देखकर मन मानो किसी अलग दुनिया में ही पहुँच गया। मसृण पक्की सड़क पर हमारी गाड़ी तेजी से आगे बढ़ रही थी और दोनों ओर प्रकृति का वैभव बिखरा पड़ा था। इसी तरह आगे बढ़ते हुए हम एक ऐसी जगह आ पहुँचे जो चारों और पहाड़ों से घिरा था। चारों ओर पहाड़ की श्रृंखलाएँ थीं और हम पहाड़ के पैरों पर खड़े थे। रास्ता भी समतल नहीं ऊँचा नीचा था। और कहीं-कहीं पर गहरी बांक थी। पहाड़ के पद तल पर उगी वनस्पतियाँ ज्यादा ऊँची नहीं थी। इसलिए यहाँ जंगली अंधेरा नहीं बल्कि रौशनी थी। ड्राइवर ने बताया कि यहाँ अजगर अक्सर रास्ते पर सोए दिख जाते हैं। तब घंटों गाड़ी रोककर खड़े रहना पड़ता है। इतना ही नहीं हाथियों का दल भी यहाँ आता है, वह भी दिखे तो गाड़ी रोककर खड़े होने के अलावा कोई चारा नहीं नजर जाता। बिहारीनाथ एक बड़ी पर्वत श्रृंखला है। इसी श्रृंखला के अलग-अलग पहाड़ को लोगों ने अलग अलग नाम दे दिया है।

बरंती से बिहारीनाथ तक आने के सफर में कई छोटे बड़े बाँध दिखे। पहाड़ों से बहकर नीचे आने वाले पानी को यहाँ इकट्ठा करके जरूरत के अनुसार खेतों में छोड़ा जाता है। रास्ते में ड्राइवर ने गंधेश्वरी नदी का गति पथ दिखाया। यह वही नदी थी जिसकी वजह से बाकुड़ा जिले में कुछ दिनों पहले बाढ़ आ गई थी। पहाड़ों से बहकर नीचे आने वाले जल से इस नदी का जन्म होता है। बरसात में अलग-अलग पहाड़ से पानी बहकर नीचे आता है और पानी का प्रवाह तेज हो जाता है। तभी आज शान्त दिखने वाली ऐसी नदियाँ बरसात में खतरनाक हो उठती हैं।

प्राकृतिक सुषमा से भरे रास्ते से गुजरते हुए अब हम आसनसोल शहर की ओर आ गए थे। इस सफर ने अनुभव की झोली में इस सत्य को जमा दिया था कि बंगाल में पहाड़ी सौंदर्य को महसूस करने के लिए हमेशा उत्तर बंगाल की ओर दौड़ने की जरूरत नहीं है। पहाड़ और झील के सौंदर्य को बरंती, मुराडी जैसे जगहों में एक साथ महसूस किया जा सकता है। इतना ही नहीं इस सफर से हम बंगाल के जयचंडी पहाड़, मुराडी पहाड़ और अयोध्या पहाड़ के गोद में वक्त बिताने आने का सपना आँखों में संजोकर जा रहे थे। इसलिए मन कह रहा था कि आज भले ही शहर में वापस लौटने का वक्त आ गया हो लेकिन फिर जल्दी ही आना होगा।